भाषा ज्ञान और सृजन का आधार स्तंभ

आराधना दत्तात्रय कदम

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18143964

ABSTRACT:

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। जिस प्रकार वो अपने विचार दूसरों तक पहुंचता है उसी प्रकार वो दूसरों के विचार सुनना चाहता है। भाषा मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग बनाती है, मनुष्य सामाजिक बनने का कारण भाषा है। अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने, अपने विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए मनुष्य के पास सशक्त माध्यम भाषा है। वैज्ञानिक दृष्टि से भाषा सिर्फ आदान-प्रदान का साधन नहीं बल्कि वह विचार करने का साधन है।

KEYWORDS:

सृजनात्मक, बौद्धिक विकास, भाषा, ज्ञान का वर्गीकरण, साहित्य का सृजन।

प्रस्तावना:

भाषा से विज्ञान, ज्ञान, साहित्य, सांस्कृतिक, तकनीकी, शिक्षा, आदि क्षेत्रों का विकास होता है। अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए मनुष्य के पास सशक्त माध्यम भाषा है। अभिव्यक्ति के स्तर पर भाषा के दो रूप पाए जाते हैं मौखिक और लिखित। भाषा के बिना ज्ञान का संचरण असंभव है। भाषा की सूचनात्मक क्षमता कल्पना पर आधारित है। इसलिए मेरा यह मत है कि भाषा मनुष्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। सृजनात्मक और बौद्धिक विकास के साथ हर स्तर पर भाषा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भाषा और मनुष्य को अलग नहीं किया जा सकता।

1. भाषा की परिभाषा:

स्वीट के मतानुसार- "ध्वन्यात्मक द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।"[i] स्वीट के परिभाषा के अनुसार बोली के रूप में विचारों की अभिव्यक्ति को ज्यादा महत्व दिया गया है।

प्लेटो के मतानुसार- "प्लेटो ने 'सोफिस्ट' में विचार और भाषा के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा है कि विचार और भाषा में थोड़ा ही अन्तर

है। 'विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।"[ii] इस परिभाषा द्वारा मनुष्य के विचार उसकी मन की भाषा में होते है लेकिन विचारों की अभिव्यक्ति की भाषा उससे भिन्न होती है, यह बताया गया है।

वेंद्रिये कहते हैं, 'भाषा एक तरह का संकेत है। संकेत से आशय उन प्रतीकों से है जिनके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है।[iii] इस परिभाषा में भाषा को केवल संकेत के रूप में स्वीकार किया है जो विचार प्रकट करने के लिए साधन मात्र है।

अतः मुझे लगता है कि "भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान विशिष्ट ध्वनि समूह के साथ करता है।"

2. मनुष्य और भाषा:

भाषा सिर्फ बोलने और सुनने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता की रीढ़ है। मनुष्य की भाषा अन्य प्राणियों से अलग है क्योंकि, उसकी अपनी विशेषता है जो इसे अन्य प्राणियों की भाषा से अलग बनाती हैं। भाषा दो व्यक्तियों के बीच विचार विनिमय करने के लिए एक सेतु का कार्य करती है। भाषा मनुष्य के विविधता समुदाय के अनुसार पाई जाती है। इससे मनुष्य और समाज में परस्पर संबंध प्रस्तावित होता है। समाज के पृष्ठभूमि के अनुसार भाषा विविध रूप में पाई जाती है। जैसे कि गांव में रहने वाले लोगों की तुलना में शहर में रहने वाले लोगों की भाषा में काफी अंतर होता है।

3. ज्ञान के वर्गीकरण में भाषा का योगदान:

भाषा का प्रयोग सिर्फ विचारों की अभिव्यक्ति के लिए नहीं किया जाता। बल्कि वह ज्ञान अर्जित करने का माध्यम है। भाषा का अध्ययन भाषा के माध्यम से ही होता है। किसी ज्ञान को प्राप्त करने के लिए भाषा का होना आवश्यक है। किसी विचार, संकल्पना, दृष्टिकोण, सिद्धांत आदि को नाम देने का कार्य भाषा करती है। भाषा ज्ञान को लिखित रूप में रखकर उसे सुरक्षित बनाती है। ज्ञान को लिखा न जाए तो न उसे व्यवस्थित कर सकते हैं न ही इकट्ठा रख सकते हैं। भाषा का व्याकरण और उसके नियम हमें तर्क देते हैं, जिससे हम ज्ञान के दो अलग-अलग हिस्सों के बीच सीमाएं खींच सकते हैं। भाषा के बिना ज्ञान अव्यवस्थित विचार है, जिसे भाषा के माध्यम से संगठित किया जा सकता है।[iv]

4. साहित्य का सृजन भाषा से:

साहित्य का निर्माण भावों से होता है और भावों को व्यक्त करने का माध्यम भाषा है। साहित्यकार अपने मन के भाव शब्दों के सहारे साहित्य में प्रस्तुत करता है। भाषा के बिना कोई भी साहित्य निर्माण नहीं हो सकता। साहित्यकार अलंकार, मुहावरों, लोकोक्तियों और विशिष्ट वाक्य संरचना का प्रयोग कर अपने लेखन शैली को आकर्षक बनाता है।[v] शब्दों का चयन, उनका क्रम और अभिव्यक्ति का अनूठा ढंग किसी भी कृति को सृजनात्मक रूप दे सकता है। जैसे कि रामायण और महाभारत की मुख्य कथावस्तु को अन्य लेखक अपनी भाषा कौशल से अनूठे ढंग से लिखते हैं, तो उनकी कृति महत्वपूर्ण बन जाती है। भाषा साहित्य के लिए सिर्फ उसका साधन नहीं, बल्कि उसका प्राण है।

5. डिजिटल युग में भाषा की स्थिति:

तकनीकी विकास ने हमारे जीवन शैली के साथ भाषा को भी प्रभावित किया है। आज के समय में किसी वस्तु या विषय की जानकारी प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन कंप्यूटर है। डिजिटल युग भाषा के लिए परिवर्तन का समय है। यह भाषा को सार्वभौमिक मंच उपलब्ध करा रहा है। लेकिन इसके साथ भाषा की पारंपरिक संरचना और शुद्धता के लिए चुनौतियाँ पेश कर रहा है। रचनात्मक और अभिव्यक्ति के माध्यम से भाषा डिजिटल सामग्री का निर्माण करती है। जैसे कि ब्लॉग, वेबसाइट, सोशल मीडिया पोस्ट और ऑनलाइन लेखों का निर्माण भाषा के माध्यम से होता है। डिजिटल जगत में भाषा की नई शैली तथा शब्दावली का विकास हो रहा है। चैटिंग और टेक्सटिंग में भाषा का संक्षिप्त रूप मिलता है। वही इमोजी में भाषा का चित्रात्मक रूप उभर कर आ रहा है।[vi]

सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में अक्सर कोडिंग और तकनीकी दस्तावेज के लिए एक विशेष भाषा का प्रयोग किया जाता है। गूगल ट्रांसलेटर और वॉइस-टू-टेक्स्ट जैसी प्रौद्योगिकियों ने भाषा की बाधाओं को तोड़ा है। अब कोई भी व्यक्ति अपनी मूल भाषा में बोलकर दूसरी भाषाओं में संदेश या लेख बना सकता है। कई बार डिजिटल माध्यमों पर भाषा की वर्तनी और व्याकरण की अनदेखी हो रही है, जिससे भाषा की शुद्धता पर असर हो रहा है। डिजिटल संसार ने औपचारिक और अनौपचारिक भाषा के बीच की रेखा को धुंधला कर दिया है। सोशल मीडिया और ईमेल जैसे माध्यमों पर भी लोग अक्सर अनौपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं।

6. भाषा ज्ञान और सृजन का आधार:

भाषा मनुष्य के विचारों को एक रूपरेखा प्रदान करती है। जब भी हम किसी वस्तु या विषय के बारे में सोचते हैं तो अक्सर शब्दों और वाक्यों के रूप में ही सोचते हैं। भाषा के बिना विचारों को स्पष्ट नहीं किया जा सकता। भाषा हमारे मस्तिष्क को तार्किक रूप में सोचने और जटिल समस्याओं का विश्लेषण करने में सहायता करती है। शब्दों का सही उपयोग हमें स्पष्ट तर्क बनाने और भ्रम से बचने में मदद करता है। नामकरण की प्रक्रिया से हम दुनिया की वस्तुओं का वर्गीकरण कर पाते हैं, जिससे चीजों को याद रखना आसान बन जाता है। वैज्ञानिक जगत और डिजिटल मीडिया के रूप में ज्ञान का संचयन केवल भाषा के माध्यम से ही संभव है। भाषा नहीं होती तो शायद ही मनुष्य प्रगति कर पाता, क्योंकि पिछले अनुभव और खोजों का मौखिक रूप से संचरण नहीं हो पाता। भाषा हमें दूसरों से सीखने में सक्षम बनाती है।

सृजन का अर्थ है नया निर्माण या नई उत्पत्ति। फिर वह कविता हो, कहानी हो, संगीत हो या कोई नया वैज्ञानिक सिद्धांत, इस सबके लिए भाषा महत्वपूर्ण है।[vii] भाषा कल्पना को एक ठोस रूप देती है। एक लेखक शब्दों के माध्यम से एक पूरी दुनिया का निर्माण करता है; एक वैज्ञानिक भाषा के माध्यम से अपने अनुमान को सूत्रबद्ध करता है। सृजन विभिन्न विचारों और क्षेत्रों के संयोजन से होता है। भाषा हमें इन विभिन्न विचारों को समझने और उन्हें एक समग्र विचार में जोड़ने में मदद करती है।

निष्कर्ष:

भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं, बल्कि यह मानवीय अस्तित्व, चेतना, संस्कृति और सामाजिक संरचना का मूल आधार है। ज्ञान को व्यवस्थित रूप और सुरक्षित रखने का कार्य भाषा से ही होता है। भाषा साहित्य की आत्मा है, साहित्यकार अपनी भाषा कौशल से साहित्य का सृजन करता है। भाषा टेक्नोलॉजी के साथ मिलकर भविष्य के संचार और ज्ञान की नींव रख रही है। डिजिटल युग में भाषा का संबंध केवल उपयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सृजन, संग्रह, विश्लेषण और परिवर्तन से जुड़ी है। भाषा ज्ञान के लिए नींव प्रदान करती है, जिससे हम चीजों को समझते हैं। साथ ही वह सृजन के लिए आवश्यक उपकरण देती है जिससे हम उन चीजों को बदल सकें या नया बना सकें।

संदर्भ:

1. "भोलानाथ तिवारी – भाषा विज्ञान - किताब महल प्रकाशन,इलाहाबाद प्रथम संस्करण (1993) – पृ.क्र. – 2
2. "भोलानाथ तिवारी – भाषा विज्ञान - किताब महल प्रकाशन,इलाहाबाद प्रथम संस्करण (1993) पृ.क्र. – 2
3. "भोलानाथ तिवारी – भाषा विज्ञान - किताब महल प्रकाशन,इलाहाबाद प्रथम संस्करण (1993) – पृ.क्र. – 2
4. भाषा, ज्ञान और वर्चस्व लेखिका : स्मृति; ब्लॉग : आवाज, 29- जनवरी 2011, https://share.google/NCt3lZA2zm6XwuYMA
5. साहित्य | परिभाषा, विशेषताएँ, शैलियाँ, प्रकार और तथ्य | केनेथ रेक्सरोथ,ब्रिटानिका. 22- सितंबर 2025 https://share.google/vGvAhtk7BFRSp2wU0
6. डिजिटल युग में भाषा विकास: एक समीक्षा[v1] | 1- जुलाई 2024, Preprints.org https://share.google/1Jq697XzLTHOM94oF
7. Why Do We Need Language | Teaching Blog – Twinkl 14- जुलाई 2022 https://www.twinkl.co.in/blog/why-do-we-need-language

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.